खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री
(मैथिली कविता-संग्रह)

कामिनी

नवारम्भ
पटना

ISBN : 978-93-82013-75-4

खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री
(मैथिली कविता-संग्रह)

© कामिनी

प्रथम संस्करण : 2017 ई.
मूल्य : 200 रु.

प्रकाशक
नवारम्भ
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मधुबनी : वार्ड न.-2, विवेक पुरम्
Email : navarambhprakashan@gmail.com
lekhakajitazad@gmail.com
मो॰-08434680149, 09631459988

मुद्रक
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Khand-Khand Me Bantait Stri
Collection of Maithili Poems by Kamini
Edition : 2017, Price : Rs 200/-

समर्पण

ई किताब अपन माय केँ
समर्पित कऽ रहल छी
जिनका ई हमेशा अपसोच रहलनि
कि हुनक पिता
बेटी हेबाक कारणे
हुनका पढ़य नहि देलखिन।

काव्य-क्रम

खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री : 9
नोर : 11
ई केहन विडम्बना : 12
अन्तर्मन : 13
ब्रह्मवाक्य : 15
पुनर्नवा : 17
अग्नि-परीक्षा : 19
स्त्रीक नियति : 21
दू मुट्ठी धान : 23
स्त्रीक धैर्य : 25
दोसर कृष्ण : 27
कन्यादान मने गंगा स्नान : 29
तील-चौर : 32
हम क्रीतदासी नहि : 34
उत्स : 36
मोफलर : 38
स्त्रीक रचना पुरुष : 40
द्रौपदी-1 : 41
द्रौपदी-2 : 43
धरौआ साड़ी : 45
सम्बन्धहीन : 49
समयक वेग : 51
बर मोन पड़ैए हमरा अपन घर : 54
परित्यक्ता : 57
ई उचित नहि आर्य : 60
हम लड़ब : 62
चानदाइ : 63
65 : एहनो कतौ भेलैए
67 : उपेक्षित
72 : गीता
74 : तार-तार भेल जीवन
77 : एतेक केँ बादो
79 : मौन
80 : टूटल तार
81 : पारो
82 : अल्हड़ हँसी
84 : स्त्री आ बुद्ध
85 : आदि सँ अन्त धरि
87 : प्रतिकार
89 : माय
91 : पाखण्ड
93 : मुक्ति
95 : ओ पुरुषार्थ कोन काजक
97 : विष सँ सविष
100 : अस्तित्व
102 : रजनीगंधाक हँसी
104 : विश्वासक हथियार
106 : फूल आ डारिक सम्बन्ध
108 : मझधार
111 : अजन्मी-1
113 : अजन्मी-2
116 : स्त्री देहक मीना बाजार
118 : मान

आत्मकथ्य

मोन कहियो नहि मानलक कि 'हम स्त्री छी।' हमरा ई करक चाही आ ई नहि। हरदम हमरा यैह लगैत रहल जे हम एकटा मनुक्ख छी, जकर अपन नाम, अपन पहचान आ अपना हिसाब सँ जीबैक आजादी होइत अछि। जे जखन चाहय अपना लेल नव दुनियाँक निर्माण कऽ सकैत अछि। सम्पूर्ण आसमान मे पाँखि पसारि देखि सकैत अछि। प्रकृतिक अनुपम रूप-छटा निहारि सकैत अछि। ओकर कोमल भाव केँ समेटि सकैत अछि अपन एक मुट्ठी सुखक लेल। जे रजनीगंधाक सुवास जकाँ ओकर मन-प्राण मे बसय सदिखन। जाहिक बलें ओ कठिन सँ कठिन परिस्थितिक सामना हँसि केँ कऽ सकय।

मुदा सब किछु अपना सोचेक अनुरूप नहि होइत अछि। बहुत रास एहन बात लोक केँ मानय पड़ैत अछि जे सत्त नहि होइत अछि। बहुत रास काज एहनो करय परैत अछि जे अनुचित रहैत अछि। एहन विकट स्थिति मे आत्मा हाहाकार करैत अछि। हृदय धिक्कारैत अछि। मन मे जगैत अछि एकटा तूफान जे सब किछु लील लेबा पर उतारू रहैत अछि। कहू, सत्त रहितहुँ झूठक सहारा लेबय परय ई केहन विवशता? सही रहितहुँ गलत साबित कऽ देल जाय, ई केहन कुंठा? परिवार-समाज, व्यवस्था सब एक दिस आ एकटा असगर स्त्री एक दिस अपन सत्तक सहारे। एहना स्थिति मे ओ कखनो जीतबो करैत अछि आ कखनो हारबो। मुदा दुनू स्थिति मे प्रतिशोधक भाव रहैत अछि जरूर। मन अन्दरे-अन्दर सुलगैत अछि सुसुप्त ज्वालामुखी जकाँ जे कखन कोन घड़ी फटि पड़त, कहल नहि जा सकैत अछि।

स्त्रीक जीवनक आधार बाहर सँ जतबे मजबूत देखाइत अछि, भीतर सँ ओतबे कमजोर अछि। एहि कमजोरीक कएक टा कारण-तत्व अछि जाहि मे स्त्रीक सम्वेदना आ ओकर दृढ़ इच्छाशक्ति जे कोनो हाल मे परिवार नहि टूटय, बाल-बच्चा बेघर नहि हुअ। कियैक तऽ सत्य एखनो ईहे थिक जे अधिकांश स्त्रीक जीवनाधार पुरुषे अछि। ओएह ओकर सर्वेसर्वा जे कखनो कर्तव्यनिष्ठ राजा बनि अपन परिवारक भरण-पोषण करैत अछि आ कखनो

क्रूर आततायी जकाँ छोड़ि दैत अछि ओकरा बीच मझधार मे डुमबाक लेल।

स्त्रीक समक्ष ठाढ़ भऽ जाइत अछि एकटा धर्म-संकट, ककरा छोड़त, ककरा पकड़त। दुनू जगह अन्ततः हारैत अछि स्त्रीये। किछु हद तक स्त्री स्वतंत्र भेल अछि। जीबैत अछि अपन जीवन अपना हिसाबे। लेकिन एकटा एकाकी जीवनक दर्द ओतहु सदैव परिलक्षित होइत अछि। स्त्री-पुरुष जीवन रूपी रथक दू चक्का। यदि एहना स्थिति मे एकोटा हारैत अछि, एकोटा संग छोड़ैत अछि तऽ जीवनक रूप केहन होयत! एकर अनुमान सहजहि लगाओल जा सकैत अछि।

बच्चे सँ देखैत एलौं अपन चारूकात पुरुषक वर्चस्व। कखनो पिता तऽ कखनो पति, दुनू रूप मे पुरुष-स्त्री जीवनक बागडोर अपना हाथ मे थम्हने। स्त्री-पुरुषक इच्छाक समक्ष झुकल एकटा मूक पशु सन जे सब फैसला पर हामी भरैक अतिरिक्त आर किछु नहि कऽ सकैत अछि। ई बात हमरा सदैव अनसोहाँत लगैत रहल। कहू, हम स्त्री छी की पिंजड़ा महक पंछी जे दोसरक मोन मुताबिक सुतब, उठब, खाएब-पीयब, हँसब-बाजब? ई स्वतंत्र सोच सदैव भारी पड़ल हमरा पर मुदा खुशी एतबहि कि हारलौं नहि कहियो ककरो लग।

हम नहि चाहैत छी की कोनो भी स्त्री केँ स्त्री हेबाक दण्ड भोगय पड़य। करय पड़य ओ सब काज जे ओकर मान-सम्मानक विरुद्ध हो। जीबय पड़ै ओहन जीवन, जाहि मे ओ सुखी नहि होइ। स्त्री उठय, जागय आ विदा भऽ जाइ ओहि अनन्त यात्रा पर जतय एकटा स्वतंत्र आ सुभितगर दुनियाँ ओकर प्रतीक्षा करैत छै। आब कोनो विवशता नहि, कोनो आदेश-अनुदेश नहि। आब केवल स्वतंत्रता सम्पूर्ण स्त्री जातिक लेल चाहे ओ कोनो जाति-धर्म-वर्ग सम्प्रदाय सँ कियैक नहि होइक। स्त्रीक सम्मान एहि समाजक प्रथम कर्त्तव्य बनैत अछि।

एहि किताबक सम्पूर्णो कविता स्त्री विमर्श केँ केन्द्र मे राखि लिखल गेल अछि। छोट-छोट दुख, छोट-छोट सुख जे हमर आँखि देखलक, हमर कान सुनलक, हमर हृदय अनुभव केलक, ओकरा अपन शब्दक माध्यम सँ लेखनीबद्ध करैक प्रयास केलौं अछि। खुशी अछि एहि बातक कि बिना कोनो लाग-लपेट, बिना कोनो झाँप-तोप केँ अपन बात केँ रखलहुँ अछि, जे जहिना छल, तकरा तहिना।

कामिनी

खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री

स्त्रीक देहक संग-संग
बिकाइत अछि आब
स्त्रीक कोखि आ दूध सेहो
स्त्री बेचि अबैत अछि
नहि जानि कोन खगता मे
अपन ममतो
एहन कठोर तऽ
ओ नहि छल पहिने
या बना देलियैए
हम-अहाँ ओकरा पाथर
जाहि पर नहि पड़ैत छै
कोनो शीत-रौदक प्रभाव
की भऽ गेलैए स्त्रीक पेट
एतेक पैघ
की नहि भरैत छै
कोनो भी विधि सँ
खण्ड-खण्ड मे अपना-आप केँ
बेचलाक बादो
स्त्री आजीवन
भटकैत अछि
अतृप्त प्रेतात्मा जकाँ
जंगले-झाड़े
गलिये-कुचिये
बजारे-बजारे
लेकिन एकटा बात बुझि लिअ
जँ एहिना
परिस्थितिक दासी बना

स्त्री बेचैत रहती अपना केँ
तऽ ओ दिन दूर नहि
जहिया प्रेम, करुणा, ममता सन
अमृत-तत्व
भऽ जायत विलुप्त
अहाँक समाज आ अहाँक जीवन सँ।

•

नोर

जखन कखनो खसैत छै
कोनो स्त्रीक आँखि सँ नोर
ओ मात्र पानिक
किछु बुन्द नहि रहैत अछि
ओ रहैत अछि
अन्याय आ अत्याचारक विरुद्ध
एकटा आवाज
जाहि मे रहैत अछि
कोनो भी राजतंत्र सँ
षडयंत्र धरि केँ
हिला देबाक ताकति

जखन कखनो खसैत छै
कोनो भी स्त्रीक आँखि सँ नोर
शापित होइत अछि
पूरा सृष्टि
त्राहिमाम् करैत अछि
चर-अचर सब जीव-जन्तु

जखन कखनो खसैत छै
कोनो स्त्रीक आँखि सँ नोर
ओ आगिक धार होइत अछि
जे रखैत अछि ताकति
सम्पूर्ण व्यवस्था केँ
जरा केँ राख कऽ देबाक
जे स्त्रीक स्वाभिमान पर
कुठाराघात करैत अछि
स्त्री सँ स्त्री हेबाक सवाल पुछैत अछि। •

ई केहन विडम्बना

जे स्त्रीक आँचर मे मुँह छुपबैत अछि
जे स्त्रीक शरीर केँ दोहन करैत अछि
जे स्त्रीक बिना जीबि नहि सकैत अछि
वैह स्त्रीक मान-सम्मान पर
उठबैत अछि सवाल
वैह बनबैत अछि
स्त्री केँ वेश्या
वैह कहैत अछि
स्त्री कुलटा अछि
स्त्री नरकक खान अछि
ओहे स्त्रीक लेल
अलग समाज
अलग घर बना
करैत अछि ओकरा एसगर
ओहे उछालैत अछि
स्त्रीक मान सम्मान केँ
फुटबॉल जकाँ
एहि हाथ सँ ओहि हाथ
आ हँसैत अछि
एकटा निर्लज्ज हँसी
जाहि मे शिष्टाचारक
एकोटा कण
नहि रहैत अछि शेष
कहू, ई केहन विडम्बना
जाहि पुरुष लेल स्त्री
अपना आप केँ अरोपि दैत अछि
ओहे पुरुष
स्त्रीक भावना केँ
बेचैत अछि
खरिदैत अछि। •

अन्तर्मन

जँ अहाँ करैत छी
कोनो स्त्री सँ प्रेम
तऽ रातिक अन्हरिया मे नहि
दिनक इजोत मे
ओकर हाथ पकड़ि
दियौ ओकर परिचय लोक केँ
की अहाँ ओकरा सँ प्रेम करैत छी
ओ अहाँ सँ प्रेम करैत छथि

जँ अहाँ करैत छी
कोनो स्त्री सँ प्रेम
तऽ बाहरी आकार-प्रकार नहि देखू
ओकर अन्तर्मन केँ निहारू
ओकर स्पर्श करू
वास्तव मे कस्तूरी बसैत अछि
स्त्रीक अन्तर्मने मे

जँ अहाँ करैत छी
कोनो स्त्री सँ प्रेम
तऽ मन-कर्म आ वचन सँ
लिअ संकल्प
नहि आबय देबै कहियो
ओकरा आँखि मे नोर
ओकरा मान-सम्मान केँ
करैत रहबै सींचित
अपन स्नेह-सत्कार सँ

रातिक अन्हरिया मे
स्त्रीक प्रेमी नहि
स्त्रीक खरीदनाहर घुमैत अछि
जे अदौ सँ स्त्री माँसक प्रेमी रहल छै
नरभक्षी जकाँ
जकरा सँ स्त्री प्रेम नहि
घृणा करैत अछि
अदौ सँ आइ धरि।

•

ब्रह्मवाक्य

शकीना खातुन
आइ बड उदास अछि
बेर-बेर नोरा जाइत छै
ओकर आँखि
जकरा सम्हारबाक कोशिश मे
ओ आरो बेसम्हार भऽ जाइत अछि

बाल-बच्चा सँ भरल-पूरल घर
आइ ओकरा लेल
अनचिन्हार भऽ गेलै
मामूली वाद-विवाद मे
रहमत मियाँ कहि देलखिन
तीन बेर तलाक-तलाक-तलाक
आ टूटि गेलै शकीनाक सम्बन्ध
रहमत मियाँ सँ
अपन घर-परिवार सँ

शकीना हाक्रोश कऽ कनैत अछि
मेहरक राशि केँ
बेर-बेर देखैत अछि
आ सोचैत अछि
खाली मेहर लऽ केँ की करब
ओकरा तऽ अपन बाल-बच्चाक संग
अपन घर-परिवार चाही
जाहि मे रहमत मियाँ सेहो अबैत अछि
जकरा संग जुड़ल छै
शकीनाक सुख-सेहन्ता

ओ आस भरल आँखि सँ तकैत अछि
अपन घर-परिवार दिस
मुदा नहि पसिझैत छै
रहमत मियाँक छाती
शकीनाक कोनो दुःख-दर्द सँ

तलाक-तलाक-तलाक
तीन टा शब्द
ब्रह्मवाक्य सन अटल
आइ ठाढ़ छै
प्रश्न-चिन्ह बनल
शकीनाक सब सम्बन्ध पर
कहैक लेल तऽ
आब ओ स्वतंत्र अछि
कऽ सकैत अछि ककरो सँ
फेर दोसर निकाह
मुदा बर्खो सँ सींचल
अपना हाथ सँ लगायल
जे फूलवारी छै
ओकर चिन्ता
की रहय देतै शकीना केँ चैन
आ एकर कोन गारंटी
की ओकरा गेलाक बाद
ओकर लगाओल फूलवारी
हरियरे रहतै
अथवा जतय ओ फेर जायत
ओतय तलाक सन विष-वाण
ओकर पछोड़ नहि करतै
ओकर छाती नहि बेधतै!

•

पुनर्नवा

आइ अहाँक नामे
तिल-कुश लऽ केँ
नहा एलौं हम
बीच धार सँ
आइ सँ अतीत भेलौं अहाँ
हमरा लेल
जकर कोनो भी प्रतिछाया
नहि पड़य देब हम
अपना जीवन पर
हम मिथिलाक बेटी छी
जे अपन मान-स्वाभिमानक खातिर
ने गरदनि कटबै सँ हटब पाछू
आ ने गरदनि काटै सँ
हम अपन स्त्रीत्व आ मातृत्व पर
हावी नहि होमय देब
कोनो तरहक अन्याय
आ अन्यायी केँ
हमरा मे अछि ओ साहस
जे लाख विपत्ति-बाधाक समक्ष
झूकत नहि
टूटत नहि
ई कोना मानि लेलौं अहाँ
की अहींक प्रेम पर
निर्भर करैत अछि
हमर जीवन

नहि श्रीमान्

एना नहि होइत छै
प्रेम अगर प्रेम रूप मे देल जाय तऽ प्रेम
नहि तऽ दान कहाइत अछि
जकर भार उठायब
कठिन नहि
अति दुष्करो अछि

लिअ अहाँक दान
आइ अहीं केँ अर्पित
हम फेर सँ जीयब अपन जीवन
पुनर्नवा भऽ
जाहि मे अहाँक नाम तक
नहि हैत शामिल
हमर नामक संग।

•

अग्नि-परीक्षा

सीता नहि देती
आब अग्नि-परीक्षा
जँ देबाक होनि
त' देथुन राम
कियै सत्य-असत्य
लाज-कलंक
पवित्रता-अपवित्रता
सब बन्धन स्त्रीयेक लेल
किया साबित करैत रहत ओ
अपना केँ सही
आगिक कुण्ड मे
झोकि-झोकि

पुरुषक लेल
सब दिन खुजल रहय
सम्पूर्ण आकाश
जाहि मे जतय मोन होनि
ओ उठथि-बैसथि
कोनो रोक-टोक नहि
कोनो सवाल-जवाब नहि
कोनो पवित्रता-अपवित्रता नहि
आ स्त्रीक लेल
लक्ष्मण-रेखा
जाहि सँ पैर राखब बाहर
जाहि केँ पार करब जीवन मे
त' रावण सँ लऽ केँ
राम धरि

सब करत अपमानित
सब करत मनमानी

पुरुषक गलतीक सजा
स्त्री कियै भोगती
अग्नि-परीक्षा
बेर-बेर सीते कियै देती
सामाजक रीति-नीति
मात्र स्त्रीयेक लेल कियै
कियै नहि पुरुषो
अग्नि-परीक्षा दऽ
साबित करता
अपन पवित्रता
अपन पत्नीक प्रति
एकनिष्ठा
कियै सीता सब दिन
परित्रासित, उपेक्षित, कलंकित
होइत रहती
राम कियै नहि
अनुभव करता
ओ दुःख-दर्द
जे अपना पत्नी केँ देने छलाह
सम्पूर्ण समाजक समक्ष
लांछित केने छलाह!

•

स्त्रीक नियति

धरतीक कोखि मे
पुनः समाय
अहाँ नीक नहि केलौं सीता
बन्द कऽ देलियै
सदा-सदाक लेल
स्त्री संघर्षक मुँह
देखू एहि देशक
कतेक स्त्री
करुणाद्र भऽ
मान-अपमान सँ थाकि-हारि
कहैत अछि– हे! धरती फाटू
जल्दी फाटू
की हम समा जाइ ओहि मे
ई न्यायोचित नहि सीता
स्त्री जीवन भरि कर्म करय
आ फलक बेर
वरण करय धरतीक कोखि
स्त्री शक्तिक ई दुर्गति
सर्वथा अनुचित आ असहनीय

अहाँ तऽ छलहुँ
एकटा राजाक पत्नी
आ स्वयं सर्वगुण सम्पन्न
जे अपना आत्मबल केँ
रावणो सन मायावी लग
डिगय नहि देलक
फेर एहन कोन व्यथा
जे अपना आप सँ हारि गेलौं
धरतीक ओद्र वरण केलौं

अहाँ केँ उठेबाक चाही छल
विरोधक झंडा
ओहिये दिन
जाहि दिन परित्यक्ता भेलहुँ
अपनहि पति
अपनहि राम सँ
ओहि राम सँ
जिनका लेल चौदह वर्ष
रणे-बने छिछिएलहुँ
राज-पाट त्यागलहुँ
निःस्वार्थ प्रेमक
एहन दुष्कर परिणाम

नहि सीता नहि
ई नीक बात नहि
अहाँ केँ सम्पूर्ण स्त्री समाजक लेल
किछु करक चाही छल
किछु बाजक चाही छल
आइ लोक कहैत अछि
सीतो सन स्त्रीक
जखन ओहन दुर्गति
तहन आम स्त्रीक
कोन गति
ई बात हमरा
नीक नहि लगैत अछि
असह्य पीड़ा दैत अछि
अहीं कहू
स्त्रीक नियति
की सब दिन
पुरुषे तय करत
या जीयत स्त्री कहियो
स्त्रीयोक लेल? •

दू मुट्ठी धान

छाती जुराइत अछि
ई हमरे बाबाक लगाओल
कलम-गाछी छी
ई हमरे पिताक बनाओल घर छी
ई हमरे बाड़ी-झाड़ी छी
ई हमरे लताम-नेबो छी
ई हमरे खेत-पथार, खर-खरिहान छी
दोसरे पल खसैत अछि
आँखि सँ नोर
छाती लगैत अछि धड़कय
मोन पड़ि जाइत अछि
मैंयाँक गेलहा गीत
''एहि पार बहिनी करुणामे करैत हे ठाढ़
ओहि पार भैया मोटरीये लेने हे ठाढ़
तोहरो लिखल भैया बाबा केँ सम्पतिया
हमरो पर के हे आस''
किछु नहि छी हमर एतय
ने घर
ने अँगना
ने खेत-खरिहान
ने बाड़ी-झाड़ी

अचानक सँ पैर घुमय लगैत अछि उनटा
एक, दू, तीन, चारि
बहुत दूर
भरल नदीक एहि पार
जकरा पार करब

जकरा सँ पार पायब
सम्भव नहि एहि जीवन मे
अनचिन्हार ओ सब लोक
जे काल्हि तक अपन छल
मेटाओल ओ पद्चिन्ह
जे हमर छल
लोक रीति-नीति
विदा करैत हमरा
खोंइछा मे दू मुट्ठी धान दऽ
जाउ आइ सँ
इहे अहाँक भाग्य भेल
आत्मा हाहाकार करैत
बेर-बेर पुछय चाहैत अछि
हे! हमर पिता
एहि मे हमर कोन दोष
की हम अहाँक बेटी भेलौं
हे! हमर भाय
एहि मे हमर कोन दोष
की हम अहाँक बहिन भेलौं
हे! समाजक रीति-नीति निर्माता
एहि मे हमर कोन दोष
की हम एहि समाजक स्त्री भेलौं
माय तऽ एके हाड़-माँस सँ निर्मित
नेना केँ जन्म देली
फेर अहाँ सब कियै
एक केँ बेटा
आ दोसरा केँ बेटी बना
एक केँ सम्पूर्ण आसमान सौंपि देलौं
दोसर केँ मोटरीक आस लगा देलौं!

•

स्त्रीक धैर्य

स्त्री हैब की कोनो कम पैघ बात छी

नहि छी कम पैघ बात
तें तऽ
तें तऽ चुकब' पड़ैत छै
स्त्री केँ स्त्री हेबाक दण्ड
पहिने ककरो बेटी
फेर बहिन
तकर बाद पत्नी
आ पत्नीक बाद माय
सबहक साँचानुरुप ढलैत
सबहक भाव-कुभाव सहैत
स्त्री बस चलैत जाइत अछि
चलैत जाइत अछि
जीवन पर्यन्त
अन्त मे पहुँचैत अछि स्त्री
स्त्रीक समक्ष
थाकल-हारल
समयक झमारल
तहन अपनहि रूप देखि स्त्री
डेराइत अछि
पछताइत अछि
तनक संग-संग
मनो पर बुझना जाइत छै
ठाम-ठाम दरारि
जकरा भरैत-भरैत स्त्री
स्त्री नहि रहि जाइत अछि

बनि जाइत अछि
बेजुवान गाय-गौर सन
निरीह जीव
ककरो खुट्टा सँ बान्हल
शीत-रौद मे भीजैत
जीवनक सब ताप सहैत
तकैत मालिकक आँखि मे
आँखि देने
करुण भाव सँ
शायद मालिकक हृदय पसीझ जाय
आ कऽ दै ओकरा
बन्धन मुक्त
एहि खुट्टा
एहि शीत-रौद सँ
ताहि दिन स्त्री
शायद स्त्रीक रूप देखि
प्रफुल्लित हुअ
मोन सँ हँसय
सवाल छै
ओहि दिन धरि
स्त्रीक धैर्य
स्त्री केँ बाँचय देत तहन ने...?

•

दोसर कृष्ण

माधव! अहाँ केना बिसरि गेलियै
की हम अहींक राधा छी
जकरा कहियो अहाँ
अपन कहने छलियै
हृदय मे बसेने छलियै
जकरा एक नजरि देखबाक लेल
घंटो यमुना तट पर
बाट हेरैत छलौं अहाँ
जकर प्रेमक राग
अलापैत छल अहाँक मुरली
माधव! हम वैह राधा छी
जे लोक-लाज, घर-समाज
सब केँ अनदेखी कऽ
अबैत छलौं
अहाँक मुरलीक धुन सुनय
अहाँ सँ भेंट करय

माधव! ई यमुना तट
ई वंशीवट
ई वृन्दावन
आइ सब मौन अछि
मौन अहाँक राधो अछि माधव
एहन कोन विवशता
की अहाँ हमरा बिसरि गेलौं
घुमि केँ कहियो नहि तकलौं
नहि जानय चाहलौं हमर हाल
की कृष्ण बिना राधा

केना जीबि रहल अछि
कहू, ई केहन विडम्बना
प्रेम केलौं दुनू
आ दण्ड आयल एसगर
हमर हिस्सा

आइ कृष्णक जीवन मे
अनेको राधा
मुदा राधाक जीवन मे
दोसर कोनो कृष्ण नहि।

•

कन्यादान मने गंगा स्नान

कन्यादान कैल जाइत अछि
एखनो हमरा ओतय
पिता! हाथ मे जव-कुश लऽ
अपन बेटीक हाथ
कोनो दोसर पुरुषक हाथ मे दैत
कहैत छथिन
''आइ सँ हमर बेटी
आब अहाँक भेली
हिनकर मान-मर्यादा
आब अहाँक भेल
आ अहाँक सुख-दुःख
हिनकर भेलनि आब''
बेचारी बेटीक
एहि मे कोनो भूमिका नहि होइत अछि
बस चुपचाप
एक हाथ सँ
दोसर हाथ मे
चलि जाइत छथि
कनैत-कलपैत
गबैत गीत
''नाथ मेरो हाथ पकड़ो
आज तुम्हारी हो गई''
आब नाथक मर्जी पर
निर्भर करैत अछि
हुनकर हँसनाय, बजनाय
सुतनाइ, उठनाइ
नाथक इच्छाक विरुद्ध

जाइक मतलब होइत अछि
बेघर भेनाइ
कियैक पिता
कन्यादानक संगहि
कऽ अबैत छथि गंगा स्नान
जिम्मेदारी सँ मुक्त हेबाक खुशी मे
ओकर बाद
पिताक कोनो सम्पत्ति पर
कहाँ रहि जाइत अछि
बेटीक कोनो अधिकार
संविधानक बात अलग छै
समाजक अलग
बेचारी बेटी
गाय-गौर जकाँ मूक भेल
बन्हि जाइत अछि
एक खुट्टा सँ
दोसर खुट्टा मे
ज्ञान-विज्ञानक बात
स्कूल-कॉलेजक शिक्षा-दीक्षा
सबहक एक-एक पन्ना उनटबैत
पबैत अछि
ओकरा संग तऽ भारी अन्याय भऽ रहल छै
अकसरहाँ सोचैत
कखनो-कखनो उफनय लगैत अछि
आ भऽ जाइत अछि फेर
अपने आप शान्त
माय जे बनि जाइत अछि
आखिर बच्चाक भविष्यक सवाल छै
ओकरे डोर सँ जुड़ल रहैत छै
ककरो आनक डोर

जकरा ओ चाहिओकऽ
कहाँ तोड़ि पबैत अछि
आ एक हाथ सँ
दोसर हाथ मे
हस्तांतरित होइत
जीबि लैत अछि
अपन जीवन
एकर अलावा
चारे कोन दोसर बचैत अछि
ओकरा लेल

कियैक दान कैल वस्तुक मान
निर्भर करैत अछि
मालिकक मर्जी पर?

•

तील-चाउर

माय कहियो नहि देलथि
तिला-सँकराति पर
तील-चाउर खेबाक लेल
टोल भरि बाँटथि
कहथि बेटीक जीवन
तऽ अपने भारी
की तील खुआकऽ ऋणी बनबियै
आइ हम कहैत छीयनि
अपन माय सँ
अगर हमर आवाज
हुनका तक पहुँचि सकय
तऽ माय
अहाँ अहगर केँ
तील-चाउर खुआउ हमरा
हमर जीवन
भारी नहि अछि
हम सक्षम छी
सब तरहें
अहाँक तील बहबाक लेल
अहाँक स्नेह-ममताक मान
रखबाक लेल
भाय भलेहि बिसरि गेल होथि
बच्चा मे खेलहा
तील-चाउरक स्वाद
हमरा मोने अछि
अहाँक त्याग
अहाँक प्रति अपन कर्त्तव्य

हम उठायब अपन कान्ह पर
वृद्ध भेल अहाँक शरीरक भार
हम पूरा करब अहाँक
सब आशा-आकांक्षा
बेटा नहि छी तऽ की भेल
बेटी तऽ हम अहींक छी।

•

हम क्रीतदासी नहि

माय रहली जीवन भरि
बाबूजीक संग
हुनक बंधुआ मजदूर बनि केँ
बाबूजीक इच्छा-आकांक्षाक समक्ष झूकल
एकटा क्रीतदासी जकाँ
कखनो हुनक धोती-कुर्त्ता साफ करैत
कखनो हुनका लेल जनेउ बनबैत
कखनो हुनक खराम सरियबैत
कखनो हुनका पैर मे तेल लगबैत
भानस केलाक बाद
घंटो मोख लग ओंगठि
बेर-बेर झुकि केँ खसैत
निनायले आँखिये
करैत रहली प्रतिक्षा
बाबूजीक घुरि एबाक घर
अन्नक एकोटा दाना
नहि दैत छलीह मुँह मे पहिने
जाबत धरि बाबूजी नहि खाइत छलाह
नानी सिखा-पढ़ा केँ जे पठेने छलखिन
''दाय, मिसर जाबत नहि खाथि
अहाँ नहि खायब किछु
पतिव्रत धर्म यैह''
माइयो केँ ई सीख
हुनका अपन माइये सँ भेटल हेतनि
एहि परम्परा केँ
धरोहरि जकाँ
सौंपलथि माय हमरो

लेकिन नहि समायल हमरा दिमाग मे
ई बात कहियो
जतय पहिने सँ विद्यमान छल
मार्क्स-लेनिन
वर्ग-संघर्ष
समतामूलक-स्वतंत्रतामूलक सिद्धान्त
जे बन्धुआ मजदूर केँ
मुक्त कऽ दैत अछि
ओकरा जीवन केँ मुख्य धारा सँ जोड़ि दैत अछि।

•

उत्स

हम अहाँक पत्नीयेटा नहि
किछु आरो छी
जेना कि ककरो माय
ककरो बहिन
ककरो बेटी
ककरो पर-परोसियो
आ सब सँ पैघ बात
एकटा स्त्री
जकरा कान्ह पर छै
एहि समाज आ एहि देशक
बहुत रास भार
जकड़ा छोड़ब
जकरा सँ मुँह मोड़ब
सम्भव नहि एहि जीवन मे
हम जे कहि रहल छी
से बुझि रहल छी ने अहाँ

जँ नहिये बुझब
तऽ हम की करब
अहाँ एहिना अलापैत रहब राग
बनबैत रहब बेड़ी
सीयैत रहब बुरका
रास्ता पर ठाढ़ कऽ
गोली मारैक धमकी
दैत रहब एहिना
एहिना हमर पाछू
जीवन भरि दौड़ैत रहब

आ निराश भऽ घुरैत रहब
हम निश्चिन्त भऽ एहिना
करैत रहब अपन काज
कियैक त' हमरा जीवनक उत्स
अहाँक उत्स सँ ऊपर अछि।

•

मोफलर

आइ एकटा मोफलर खरीदलौं
आइ एकटा मोफलर देखलौं
तऽ मोन पड़ि गेल
एकटा आरो मोफलर
ओ कोनो आम मोफलर नहि छल
ओ छल खास आदमीक
खास मोफलर

बच्चा रही तऽ एकटा कैलेंडर
अनने रहय भाइ
जाहि मे छल बारहो महिनाक लेल
बारह कवि
मुदा हमरा जे सब सँ नीक लागल रहय
ओ गरदनि मे मोफलर लटकेने
एक दम राजकुमार सन राजकमल
आ बारहो महिना
हम एके महिनाक कैलेंडर
टँगने रही गेल रही घर मे
सच कही तऽ
स्त्रीक मोन मे
पुरुष केँ प्रति जे आकर्षण होइत छै
ओहिये फोटो केँ देखि केँ जागल रहय
एहि सँ पहिने जे पुरुष देखने रही
थाकल-हारल माथ सँ पसेना चुबैत
फाटल बेमायबला
अपने पिता सन
गरीब किसान-मजदूर

जकरा जीवन मे
सुख-सेहन्ता
सपनो मे सपना रूपे
नहि अबैत छै!

•

स्त्रीक रचना पुरुष

जखन कखनो खसतै
पुरुषक माथ सँ घाम
स्त्री अपन आँचर सँ
पोछबे करतै
अपन छत्र-छाया मे
पुरुष केँ समेटबे करतै

जखन कखनो एतै पुरुष
थाकल-हारल घर
स्त्री एक थारी भात
आ एक लोटा पानि लऽ
परोसबे करतै
स्त्री सींचबे करतै
अपन लगाओल फूलवारी
कियैक त' पुरुष
स्त्रीयेक रचना छी
ओकरे कल्पना छी।

•

द्रौपदी-1

द्रौपदी! कतेक खण्ड मे
बँटल हैत
अहाँक भावना ओहि दिन
जहिया खण्ड-खण्ड मे विभक्त कऽ
बाँटि देल गेल हैत अहाँ केँ
पाँच पतिक पाँच हिस्सा मे
आत्मा तऽ जरूर
हाहाकार केने हैत
आखिर कतऽ सँ अथ करी
आ कतय इति,
वेदाग्नि मे जरूर
जरैत नजरि आयल होयत
अहाँ केँ अपन सब सपना
एक स्त्री, पाँच पुरुष
ककर-ककर मान धरू
ककर सम्मान
ककर अपमान कोन रूप मे
कखन भ' जायत
तकर आशंका
सदैव सतबैत

द्रौपदी! काँटक सेज सन
चुभल हैत अहाँ केँ अपन
सोहाग रातिक सेज
ककर कोबर अन्हार करू
ककर इजोत
एकटा उहापोह मे

फँसल हैब जरूर

द्रौपदी! हम अनुभव कऽ सकैत छी
अहाँक दुःख-दर्द
आखिर हमहुँ एकटा स्त्रीये त' छी।

•

द्रौपदी-2

द्रौपदी! असहज लागि रहल अछि
अहाँक खुजल केशक भार हमरा
सर्दी-गर्मी
पानि-पाथर
घर-बाहर सब जगह
उठौने एहि खुजल केशक भार
अहाँ कोना जीबि रहल छी
आ ओहि पुरुषक लेल
ई केहन प्रण
जे दाव पर चढ़ा देलक
लाबा जकाँ भरल सभा मे छिड़िया देलक
अहाँ पाण्डवक पत्नी छलहुँ
कोनो जायदाद नहि
अहाँ हस्तिनापुरक कुलवधु छलहुँ
कोनो चौसरक दाव नहि
सब अपना-अपना सुविधानुसार
अहाँ केँ बेचलक
अहाँ के खरीदलक
अहाँ आ बेजुबान पशु मे
कोन अन्तर रहल द्रौपदी
हमरा बुझने कोनो अन्तर नहि
दुनू एक दोसराक हाथक गुलाम
फेर ई खुजल केश
कथी लेल
ककरा लेल
जँ कनेको स्वाभिमान बाँचल छल

तऽ ओहिये दिन
दितियै खींच केँ थापड़
दुःशासनक गाल पर
शकुनीक चाल पर
आ रंगीतहुँ अपनहि हाथ सँ
दुःशासनक खून सँ
अपन केश
हम गर्व सँ कहितौं
द्रौपदी हमरे देशक स्त्री छलीह।

•

धरौआ साड़ी

यशोदा जी गुर्राइत छथि
तमसाइत छथि
दाँत कीचैत छथि
पति पर
बाल-बच्चा पर
अरिजन-परिजन पर
ककरा पर
पता नहि

यशोदा जीक 'ओ'
सरकारी बाबू
सब दिन आँखि खोलितहि
पहिने तरहत्थी देखैत छथिन
फेर 'कराग्रे वसते लक्ष्मी
कर मध्ये सरस्वती'क
मंत्र पढ़ैत छथिन
भूमि केँ प्रणाम करैत
उठि केँ ठाढ़ होइत छथिन
भगवान भास्कर केँ
आकाश मण्डल पर देखितहि
'उदित उदयगिरि मंच पर
रघुवर बाल पतंग'क संग
मूड़ी झुका प्रणाम करैत छथिन
फेर नित्य-क्रिया सँ निवृत्त भऽ
अनुलोम-विलोम करैत
शवासन मे आबि केँ
निष्क्रिय भऽ जाइत छथिन

सक्रिय होइत छथिन तखन
जखन यशोदा जीक शब्दवेधी वाण
एहि कान सँ ओहि कान धरि
आर-पार भऽ जाइत अछि
बाबू साहेबक
दैनिक कार्यक्रमक रूपरेखा
बनैत अछि
पण्डित सुरेश ब्रह्मचारी जीक
राशिफलक फलागम सँ
एतेक बाजि केँ एतेक मिनट पर
ब्रह्मचारी जी कहैत छथिन
आइ घर सँ निकलबाक अछि
तऽ बाबू साहेब
ओतेक बाजि केँ
ओतबे मिनट पर
घर सँ निकलैत छथिन
ब्रह्मचारी जी कहैत छथिन
आइ लाल कमीज पहिरब शुभ रहत
तऽ बाबू साहेब लाले कमीज पहिरैत छथिन
ब्रह्मचारी जीर कहैत छथिन–
आइ पत्नी सँ विवादक सम्भावना
बनैत अछि
तऽ बाबू साहेब
बलहुत्थोक विवाद करैत छथिन
आ अन्त मे हाथ उठा दैत छथिन
एहि मे हम की करू
ई तऽ आजुक योग छल
यशोदा जीक मोन करैत छनि
चाहे तऽ केबुल कनेक्शन कटबा दी
या टी.वी. फोड़ि दी

मुदा बाबू साहेब
एकदम सजग
करती तऽ करती की
अन्त मे बाबू साहेब
दिनक अनुसारे
खट्टा-मिट्ठाक आस्वादन कऽ
कॉलर सरियबैत
बेल्ट बान्हैत विदा भऽ जाइत छथिन ऑफिस
पाछाँ रहि जाइत छथि
यशोदा जी
अम्बार लागल बरतन-बासन
झाड़ू-पोछा
कपड़ा-लत्ता
खापड़ि महक तीसी जकाँ
अपने चनचनाइत छथि
फेर चुप्प भऽ जाइत छथि
आँखि सँ बहय लगैत अछि
गंगा-यमुना जकाँ
अविरल अश्रुधारा
मोन पड़य लगैत छनि
लेमिनेशन कराओल
स्कूल-कॉलेजक
प्रथम श्रेणीक सर्टिफिकेट
मायक शब्द
दाइ पढ़ि-लिखि केँ किछु करिहें
मास्टर साहेबक सपना
जकरा ओ बीजारोपन केने छलाह
नेनपने मे
यशोदा जीक हृदय मे
सुभद्रा कुमारी चौहानक कविता

'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी'
बसैत अछि
हुनकर जीवन
बाढ़िक पानि जकाँ
बेलक्ष्य कहियो नहि रहल
मुदा बाढ़िक वेग पर भसियाइत
तिनका जकाँ
ओ बेवजह भटकैत रहलीह अनिक्छे
सब दिन इएह सोचैत
आइ नहि तऽ काल्हि
परिवर्त्तन जरूर हेतै
मुदा समय बीतैत गेल
बीतैत गेल
यशोदा जी बाट तकिते रहि गेली
परिवर्त्तन नहि भेल
आब केशो पाकि गेलनि
दाँत मे दर्द सेहो रहैत छनि
एको बेर बजैत छथि
तऽ धीया-पुता कहैत छनि 'चुप्प'
डरे ने सही मुदा
क्षोभ सँ ओ चुप्प जरूरे भऽ जाइत छथि
यशोदा जी करती तऽ करती की
मान-सम्मान
अपन पहचान
पेटी मे राखल
कोनो धरौआ साड़ी तऽ नहि
जकरा ओ निकालती
आ पहिर लेती
कतौ जेबा-एबाक लेल!

•

सम्बन्धहीन

अहाँक देलहा गुलाब
मुरझा गेल
सुखा गेलै ओकर पातो
गंध तऽ पहिनहि बिला गेल रहै
जहिया हमरा आ अहाँक बीच
बढ़ल रहय तकरार
अहाँ ओहि मुँह
आ हम एहि मुँह घुमि
बढ़ि गेल रही आगू
आँखि सँ खसल रहय
दू बून्द नोर
जे गाल पर दने
मुँह धरि आबि गेल रहय
जकरा पीबि गेलौं
ई सोचि जे
जीवन मे
आब ने ककरो गुलाब देब
आब ने ककरो सँ गुलाब लेब
जीबाक लेल
प्रेम धरि अछि जरूरी
एहू बात केँ कात राखि
जीबय लगलौं
निःशब्द जीवन
रस-गंधहीन
ने ककरो सँ आदरक प्रतीक्षा
ने ककरो लेल कठहँसी
हँसबाक बेगरता

मुदा एतेक कठिन होइत अछि
ककरो नहि भेनाइ
कियो अहाँक नहि हुअ
से धरि नहि छल बुझल
नहि छल बुझल
एतेक कठिन होइत अछि
सम्बन्धहीन जीवनक भार।

•

समयक वेग

क्षमा करब हे जननी
जीवनक एहि चारिम अवस्था मे
जतय अहाँ केँ बेगरता अछि
अपन सन्तानक
हम चाहियोक
किछु नहि कऽ पाबि रहल छी

कहियो अहाँ हमरा
अपना कोरा मे लऽ
खुएने छलौं
कौआ कर, मेना कर, परबा कर कऽ
अन्नक एकहक टा दाना
दाइ केँ पेट भरौन कहुना
दुलरी जे बड रही
सम्पूर्ण आसमानक
एकेटा चान
आइ अहाँ भूखल छी
या भरल अछि
अहाँक पेट
हमरा नहि पता
हमरा तऽ एतबे पता अछि
माय आब भानस-भात करबा जोग
नहि रहली
बिमारी आ चारिमपन
दबोचने छनि हुनक कण्ठ
आस भरि नजरि सँ

जोहैत छथि बाट
आइ नहि तऽ काल्हि
जरूर आओत हमर नेना
हमरा लग
हमर हाल-चाल पुछय
हमर सहारा बनय
मुदा क्षमा करब हे जननी
समय आ परिस्थितिक गुलाम
हम कठोर भऽ गेल छी
घेर लेने अछि हमरो
अहीं बला माया
नेना केँ कौआ कर
मेना कर खुएबाक बेगरता
ई जनितहुँ कि काल्हि
हमरो नेना हमरे जकाँ
अपन खोता बनाओत
ओहि मे अपन घर-परिवार बसाओत
आ बिसरि जायत हमरा
अपन विवशताक हवाला दैत

क्षमा करब हे जननी
हमरा अनुभव अछि
अहाँक दुख-दर्द
असगरुआपनक अकुलाहटि
मुदा पुनः
नहि घुरि सकैत छी हम
अहाँक घर
जे कहियो हमर अपन छल
आ ने शामिल कऽ सकैत छी
अहाँ केँ अपना घर मे

जे नहि हमर छी
हमरा आँखि मे नोर
आ हृदय मे दर्द
भरल अछि जरूर
अपन कर्त्तव्य नहि निभा पाबैक
विवशताक कारणे
मुदा क्षमा करब हे जननी
जीवन कागजक नाव जकाँ
बहि रहल अछि
समयक वेग पर
कतऽ आ कोना
अड़रा लागत
हमरा नहि पता।

•

बड मोन पड़ैए हमरा अपन घर

एतै कतौ छल
हमर घर
जे आब नहि देखा रहल अछि
जकरा अँगना मे बैसि कऽ
कएक बेर लेने रही हम
अपना भाइ सँ नोत
बन्हने रही ओकरा हाथ मे
'मेरे भैया' वला राखी
जकरा संगहि संग
घरक छत पर सँ
निहारने रही पूर्णिमाक चान
बिछने रही आमक टिकला
जकर बर नीमन आचार
बनेने रहैथ माय
एक कोन पापड़ केँ
दू टुकड़ी कऽ
एकटा हमरा दैत छल
आ दोसर अपने खाइत छल
काँट गरय हमरा
नोर खसै भाइक आँखि सँ
''बहिन केँ बर दर्द होइत हेतनि''
सपना हमर आ पूरा करय ओ
जखन कखनो जाइ मन्दिर
माथ झुकाबी दुनू
आ आशीर्वाद आबय
मात्र हमरे लेल
एक बेर तऽ जबर्दस्ती

लऽ गेल रहय हमरा
ज्योतिषी जी लग
आ अनुनय केने रहय
देखैय लय हमर हाथ
हमरा भाग्य मे की अछि
ज्योतिषी जीक चौअनियाँ मुसकान
एखनो मोन अछि हमरा
फेर कोन एहन हवा बहल
जे छीन केँ लऽ गेल
हमरा सँ हमर सब किछु
अपन घर
अपन परिवार
अपन लोक
अपन समाज
सोचैत छी कएक बेर
तऽ आँखि नोरा जाइत अछि
ई कोनो प्राकृतिक आपदा तऽ नहि छल
जे बेसम्हार हुअ हमरा सँ
ई हमरे बनाओल नियम छल
जे छीन लेलक हमरा सँ
हमर सब किछु
भाइ कहैत छथि ई हमर घर छी
आ पति कहैत छथि हमर
आखिर हमर घर कतय गेल
कोना बिला गेल
सत् कहैत छी
बर मोन पड़ैए
हमरा अपन घर
जँ पता चलय ककरो
तऽ कहब

हम जाय चाहैत छी
अपन घर
भटकैत-भटकैत थाकि गेल छी हम
हेरैत-हेरैत हारि गेल छी हम।

•

परित्यक्ता

कियै सदैव परित्यक्ता
स्त्रीये होइत अछि
पुरुष कियै नहि होइत अछि परित्यक्त
कियै सदैव
अपन मान-सम्मान
अपन जीवन-मूल्य
अपन घर-संसार
स्त्री केँ लगबय पड़ैत छै दाँव पर
कियै कखनो यशोधरा बनि
दैत अछि
राहुलक बाल-सुलभ
उटपटाँग सवालक जवाब
कियै पाथरक राजमहल मे
पाथर बनि करय पड़ैत छै
ओहि आर्यपुत्रक प्रतिज्ञा
जकरा लग सम्पूर्ण संसार केँ देबा जोग
सब किछु छल
मुदा ओकरा लेल किछु नहि
कियो नहि देखलक
की अहिंसाक जनक
स्वयं तथागत
कतेक निर्ममता सँ केलनि
यशोधराक सब सुख-सेहन्ताक खून
घसि-घसि केँ
चाननक लकड़ी केँ
चन्दन बनबैवला तुलसीक रत्नाक

दोष की छल?
बस एतबे ने
की भादवक भरल राति मे
पति केँ दुत्कारि देलनि
प्रेम-भाव सँ सत्कार नहि केलनि
चोट खाएल साँप सन
विष मे लपेटल तुलसी
लौटलाह आ आँजुर भरि जल सँ
गृहस्थ जीवनक परित्याग केलाह
रत्नाक घर-संसार केँ बरबाद केलाह
तुलसी तऽ राम संग रमि गेलाह
रत्ना! रत्ना तऽ जीवन भरि
भटकैत रहली
पति वियोग मे तड़पैत रहली
एहि घाट सँ ओहि घाट

तुलसीक राम!
की छलाह स्वयं निष्पक्ष
अगिन परीक्षा लेलाक बादो
केलनि सीताक परित्याग
जनकनन्दनी जानकी
भेंट चढ़ि गेली
ओहि लोकापवादक
जे ने एकटा राजाक लेल न्याय-संगत छल
आ ने एकटा पतिक लेल

अहीं कहू! अहिल्याक की छल दोष?
जे वर्षों वर्ष धरि
पाथरक शिला बनल पड़ल रहली
अघोर जंगल मे

केवल एहि दुआरे
की गौतम-ऋषिक भान नहि भेलनि
पर पुरुषक छल-कपटक
ज्ञान नहि भेलनि
दिव्य-द्रष्टा
त्रिकालदर्शी
तऽ स्वयं ऋषि छलाह
ओ तऽ छलीह सहचरी
साधारण स्त्री जे पतिक लालसा पूर्ण केने छलीह
स्त्रीयोचित सुख सँ
सम्पूर्ण केने छलीह
फेर कियै भेलीह ओ दण्डित
पति सँ शापित
कियै सदैव परित्यक्ता
स्त्रीये होइत अछि
पुरुष कियै नहि होइत अछि परित्यक्त?

•

ई उचित नहि आर्य

प्रेम मे परित्याग
उचित नहि आर्य
अहाँ तऽ कहाइत छलहुँ
मर्यादा पुरुषोत्तम
फेर मर्यादाक हनन
कतय तक शोभा दैत अछि
अहाँ केँ आर्य
रावण जे सीताक हरण केलक
एहि मे सीताक कोन दोष?
दोष तऽ छल अहाँ केँ ने आर्य
की अपन पत्नीक रक्षा नहि केलौं
बाहरी विपत्ति सँ
हुनका नहि बचेलौं
आ ई अग्नि-परीक्षा तऽ
अहीं ने लेने छलियै आर्य
सम्पूर्ण समाजक समक्ष
फेर एक अदना सन आदमीक
बातक एतेक मान
जे अहाँ अपन पत्नीक
परित्यागे कऽ देलहुँ
गर्भावस्थाक उपरान्तो
वनवासे दऽ देलहुँ
जे स्त्री अपन पतिक
सब सुख-दुखक सहभागी बनल
ओकरा लेल एतेक कठोर दण्ड
ओहो बिना कोनो कसूरक

कतय तक उचित छल आर्य

अहाँ जे केलहुँ
अपना पत्नीक संग
ओ तऽ शायद रावणो नहि केलक
सीताक संग
ई केहन मर्यादा आर्य
जतय ने अहाँ पति बनि पेलौं
ने पिताक कर्त्तव्य निभेलौं
तें शायद
मर्यादा पुरुषोत्तम कहेलौं!

•

हम लड़ब

हम लड़ब
अन्त-अन्त धरि
जामे धरि बँचल रहत
हमरा मे एकोटा साँस
एको बून्द खून
एको रत्ती स्वाभिमान

हम लड़ब
अन्त-अन्त धरि
जामे धरि होइत रहत
दुनियाँक कोनो भी स्त्रीक संग अन्याय
कुचलल जाइत रहत
ओकर स्त्रीत्व
मातृत्वक हरियर लत्ती मे लपेट
ओकर ममता केँ
ओकर कमजोरी बना

हम लड़ब
अन्त-अन्त धरि
जामे धरि दुनियाँक
सम्पूर्ण स्त्री
एक नहि भऽ जेती
अन्यायक विरुद्ध
मानव-शृंखला नहि बनेती

हम लड़ब
अन्त-अन्त धरि
जामे धरि हम जीत नहि जैब
अपना लेल अलग
एकटा दुनियाँ नहि बनायब। •

चानदाइ

चानदाइ जखन विदा भेल रहथि
पहिल बेर सासुर
आइ-माइ खोंइछा मे
दूभि-धान दैत
गबैत रहय समदाऊन
''घीवक घैल जकाँ पोसलौं गे बेटी
बेटा जकाँ केलौं दुलार''
आ छाती पीट-पीट
चानदाइक संग-संग
कनैत रहय चानदाइक माइयो
बाबुजीक पैर पर खसैत
चानदाइ केने रहथि अनुनय
''हमरा नहि बिसरब यौ बाबू''
श्रीपति बाबू
चानदाइक माथ पर हाथ रखैत
आ छाती सँ सटबैत
कहने रहथिन–
''दाइ आइ सँ हमर माथ पाग
आब तोरे हाथ मे छौ
जानो दऽ केँ रखिहें एकर मान
बिसरि जइहें आइ सँ नैहरक लोक केँ
जे हेथुन आब से सासुरेक लोक''

खण्ड-खण्ड मे बँटैत
अपन भावनाक संग
चानदाइ आबि गेल सासुर
आ ताहि दिन सँ

सहैत रहल सबहक भाव कुभाव
आ हँसैत रहल एना
जेना किछु भेल नहि हो
जाहि दिन नहि भेलै बर्दास्त
विदा लऽ लेलक
एहि सासुर, एहि नैहरक चक्र सँ बाहर
आब माथो बचल अछि
आ पागो
जे किछु नहि बँचल ओ छल बेटी
ओ छल चानदाइ!

•

एहनो कतौ भेलैए

हे भगवान! पुनमिया नहि बचतै
एहि बेर
की पता बाँचियो जाय
लोक तऽ सैह कहैत छै
स्कूल सँ बाहर निकालि
माथ मे सिनूर
आ गरदनि मे मंगल-सूत्र पहिरा
ओकरा बियाहि देल गेलै

हे भगवान! एहनो कतौ भेलैए
चौदहे साल मे
माय बनै वाली छै
छौड़ी केँ बुधियो कहाँ कोनो छै
ढहलेल जकाँ हँसैत रहैत छै
भगवानो केहन बइमान छथिन
ओकरा गरदनि मे
ई केहन फाँस लटका देलखिन
मुदा भगवानो की करथिन
लोक तऽ अपने अतत्तह करैत अछि
ओ छलै एखन बियाहै वाली
मुदा माइयो-बाप की करतै
छह-छह गो बेटी
बेरा-बेरी सब केँ
पार-घाट तऽ लगेनाइये छलै
एकटा बेटा दऽ दितथिन शुरूहे मे
से नहि भेलनि

भगवानो बर बइमान छथिन
ककरो छिट्टा भरि-भरि भात
ककरो पातो पर नै भात

की करथिन बहिन दाइ
दुनियाँ एहिना चलैत छै...।

•

उपेक्षित

जीवन सँ जुड़ि जाइत अछि
किछु चीज ऐना
जे ओ चीज भऽ जाइत अछि प्रधान
आ जीवन भऽ जाइत अछि गौण
किछु एहने सन
हमरो जीवन सँ जुड़ल अछि
हमर नाम– फूल कुमारी
पहिने बहिन कहलथि फूल कुमारी
फेर भाइ, माय, अरोसी-परोसी
तकर बाद तऽ
स्कूल-कॉलेजो धरि गेल
हमरा संग-संग

ककरो नीको लगलै
ककरो बेजाइयो
कियो प्रसंशो केलक
कियो निन्दो
एहनो कतौ नाम होइ भला
फूल कुमारी
एकदम देहाती

सचमुच देहाती तऽ हम छीहे
धरतीपुत्र गृहस्थक बेटी
जकर पिता साक्षर मात्र
आ माय एकदम निरक्षर
हनुमानो चालीसा पढ़ैक लेल लालायित

कैक बेर हम
मायक लिलसा
पूरा करबाक लेल केलहुँ कोशिश
मुदा कहाँ भेलनि
माय केँ फुरसति
की हमरा सँ पढ़ितथि
निरक्षर सँ साक्षर होइतथि
गृहस्थक घर मे काज
सालो भरि चलिते रहैत अछि
एकटा फसिल तैयार नहि भेल कि
दोसरक तैयारी

काज! काज!! दिनभरि काज
धौर एहनो कतौ जीवन होइ
सब दिन काजे-काज
हम तऽ देखियेकऽ थाकि जाइत छलौं
माय धरि नहि थकैत छली कहियो
कहैत छली– थकने गुंजाइस छै

सत्य कहैत छली
थकने नहि छल गुंजाइस
ने ओहि दिन
ने आइ
मुदा हमर नाम फूल कुमारी
पड़ल कोना
बर तामस चढ़ैत छल हमरा
सबहक नाम– रीता, पुनीता
आ हमर नाम फूल
भला फूलो कोनो नाम भेल
फूल मने तऽ सब फूल

बेली, चमेली, चम्पा, अड़हुल
कोनो भी फूल
मुदा सुनि केँ खुशी भेल
ओहि दिन
जहिया माय कहलथि
'तोहर नाम तऽ तोहर बहिन रखने छलौ
जे पढ़ै मे बर तेज
आ चित्रकारी मे
एकदम सिद्धहस्त छल

हमरा नहि छल बूझल
हमरा कोनो बहिनो छल
माय कहैत रहली
आँखि सँ मोतीक धार बहबैत–
''तोहर ज्ञान प्राण होइ सँ पहिने
ओ हमरा सब केँ छोड़ि
चलि गेल ओतय
जतय सँ आयल छल
नीक लोक केँ भगवान
जल्दी बजा लैत छथिन की ने दाइ

ओहि दिन सँ
ताकय लगलौं
कॉपी-किताबक ढेर मे
अपन बहिनक बनाओल चित्र
भगवानक मर्जी
एक दिन ओ भेटियो गेल
छाती सूप सन भेल
जेना हेराओल बहिन
भेटि गेल होथि तहिना

ताउ वला कागज केँ मोड़ि
आ सीबि केँ
बनाओल छल ओ कॉपी
जाहि मे कतौ मोर
तऽ कतौ तितली
कतौ माछ
तऽ कतौ उज्ज्वल जलधारा छल

एकटा सुन्दर सन घरक चित्र
सेहो बनाओल छल
ओहि कॉपी मे
जकर अँगना मे खेलाइत छल
दूटा नेना
एकटा शायद बहिन होथि
आ एकटा हम
आब ने ओ कॉपी देखा रहल अछि कतहु
ने बहिनक कोनो अता-पता
आँखि सँ खसि पड़ैए जरूर
दू बुन्न नोर
जखन मोन पड़ैत छथि बहिन
काश! भेटितथि एक बेर
तऽ पुछितौं एकटा प्रश्न–
''दाइ फूल कुमारी हमर नाम
अहाँ की सोचि केँ रखने छलौं''

माय कहैत छथि
राजाक बेटीक नाम छल– फूल कुमारी
एकदम सुन्नरि सुकुमारी
जकर कहानी बहिन पढ़ैत छली अपनो
आ सुनबैत छली माइयोक

ओहि राजाक बेटीक नाम सँ
दाइ राखि देलथि हमर नाम– फूल कुमारी
कहथि– हमरो बहिन अछि
राजेक बेटी सन सुन्नरि, सुकुमारि
तें फूल कुमारी
मुदा दाइ! राजाक बगियाक फूल
आ परती परहक फूल मे
कतेक अन्तर होइत छै
से नहि बुझि सकलौं अहाँ
एकटाक देखभाल करैक लेल
हजारोक लाइन लागल रहैत अछि
दोसर रहैत अछि ठाढ़
टाँट पड़ल धरती पर
बेसहारा, उपेक्षित
जकरा देखनिहार
देखभाल केनिहार
कियो नहि होइत अछि!

•

गीता

जिम्मेदारीक पहाड़ तर
दबल अछि गीता
चारि-चारि गो बेटी
तीन-तीन गो बेटा
एकटा निकम्मा
अदना सन घरवला
सब किछु असगरे सम्हारैत
समय सँ पहिने
बुढ़ा गेलैए
अकड़य लगलैए
ओकर डाँड़
घर सँ बाहर धरिक
काज करैत-करैत

कहियो गीता
हमरे संग
गली-मोहल्ला मे
तितली जकाँ उड़ैत छल
रंग-रंग, तीत्ती, हत्था-गोदी
गोटरस आदि खेलैत छल
आमक डारि पर झूला लगा
हम संगहि झूलने छी
कैक बेर
कैक बेर तऽ
हम संगहि चोरेने छी
ककरो गाछक लताम

ककरो खेतक मटर
आ अपना हिस्सा सँ
किछु हिस्सा लऽ कऽ
ब्रह्मबाबा केँ चढ़ौने छी चढ़ौआ
जे हमर चोरीक बात
हमर पिता तक नहि पहुँचय

हम संगहि सीखने छी स्कूल मे
'अ' से अनार
'आ' से आम
'इ' से इमली
'क' से कबूतर
कि अचानक सँ एकदिन
गीता केँ बियाहिकऽ
बिदा कऽ देल गेलै
अनजान देश आ अनजान लोकक संग
जतय तनक संग-संग
मनोक दोहन खूब भेलैए ओकर

हमरा याद अछि आइयो
जाइत-जाइत गीता
खूब कानल रहय
अरोसी-परोसीक गरदनि पकड़ि
आ दऽ गेल रहय
अपन आँखिक नोर
अमानती रूप मे।

•

तार-तार भेल जीवन

पहिल बेर जखन लेने रही
अपना हाथ मे हमर हाथ
एकटा सुखद अनुभूति
भेल रहय हमरा
लागल रहए
नदीक वेग पर बहैत
असगरुआ जीवन केँ
एकटा खेबनिहार भेटि गेल

ओ सर्द भेल हाथक स्पर्श
एखनो मोन अछि हमरा
जे सम्पूर्ण समाजक समक्ष
थमने रहय हमर हाथ
भेट भेल रही जखन
पहिल बेर एकान्त मे
अहाँ कहने रही–
''अहाँ बर सुन्दर छी''
आ लाजे हम झाँपि लेने रही
अपन दुनू हाथ सँ
अपन मुँह
आ अहाँ हठ करैत
हटा देने रही हमर हाथ
हमरा मुँह पर सँ
आ हमर मुँह ऊपर उठबैत
कहने रही अहाँ–
''एक बेर देखियौ

हमरा आँखि मे
अपन आँखि दऽ
सब नीक लागत''

हम तऽ सपनाक दुनियाँ मे
विचरण करै वाली अल्हड़
एहि वास्तविकताक
कहाँ रहय भान
लाजे मूड़ी गारि लेने रही
अपना दुनू ठेहुनक बीच
तामे पाछू सँ ठकठकायल रहय
केबाड़क पाट–
''बुच्ची खोलू घर
लोक सब आयल अछि
चौधरी जी केँ देखबा लेल''
''एखन एतबे रह दीयौ''
भागल रही जान-जी लऽ कऽ
डरे धक-धक करैत रहय छाती
धरि जाइत-जाइत अझक्के
देखा गेल रहय
अहाँक उतरल मुँह
जे एखनो मोन अछि हमरा

दोसर बेर जहन भेल रही भेट
एकटा चन्द्रहार गरदनि मे पहिरबैत
अहाँ कहने रही–
''आइ सँ हमर सब किछु
आब अहाँक भेल''
आ सटा लेने रही हमरा
अपन छाती सँ

हमहुँ सत्य केँ स्वीकारैत
अरोपि देने रही अपना केँ
धीरे-धीरे बुझय लगलौं
सपना आ सत्यक भेद
जखन एकटा प्रेमी केँ
पुरुष मे बदलैत देखलौं
आ एकटा पुरुष केँ
एकटा भुखायल जानवर मे

मोने अछि एखनो हमरा
अपना आँखिक
ओ अधरतियाक नोर
जखन अहाँक व्यवहार सँ तंग आबि
हम भागि आयल रही
केबाड़ खोलि
आ बंद कऽ देने रही हेंडिल आगू सँ
की कहीं बाहर नहि आबि जाइ अहाँ
एक दिस गबैत रहय स्त्रीगण
मंगल गीत
आ दोसर दिस
हबोढकार भऽ कनैत रही हम
तकर बाद सँ
जखन कखनो भेट भेलौं
स्त्री आ पुरुषे रूप मे
एक दोसरक भूख-पियास मेटबैत
तार-तार भेल जीवन जीबैत।

•

एतेक भेलाक बादो

माथक घाम
जखन पैर दऽ खसैत अछि
कहाँ चलैत छैक पता
एकटा स्त्री केँ
की तरकारी मे नोन कतेक पड़लै
सोहारी जरलै
की ठीके छै
चाय मे चीनी कम पड़लै
की बेसी
ओकरा तऽ एतबे मोन रहैत छैक
कखन ओकर काज खतम हेतै
आ ओ बाहर निकलत
एहि पचास डिग्रीक टेम्प्रेचर सँ
अपना लेल
कनी समय सहेजबाक खातिर
जतय देखि सकत
अखबारक हेडलाइन
या सम्पादकीय पर कऽ सकत
कनी बहस
या बैसिकऽ घड़ी-दू घड़ी
सोचि लेत कोनो कविता
कोनो कहानी
वा कऽ लेत कोनो उपन्यासक पात्रक
सही-सही चरित्र-चित्रण
ओकरा तऽ तखन पता चलैत छै
जखन कियो कहैत छैक–
''धौर, तरकारियो कोनो खाइबला छैक

नोन-नोन भरल छै''
कियो कहैत छै–
''अरे रोटी देखियौ ने
चारूकात सँ जरले-जरल छै''
फेर अबैत छै आवाज–
''आ चाय! चाय तऽ शरबते बुझू''
कियो करैत छै कटाक्ष–
''घरक काज मे मोन नहि लगैत अछि
तऽ भऽ आउ नैहर सँ''
फेर सोचैत अछि ओ
चारि बजे भोर सँ
जाहि खाना केँ बनबै लेल
ओ ठाढ़ि अछि
भनसाघरक चुल्हि लग
तकर एतेक अपमान
की ई हमर अपमान नहि छी
तखने पड़ैत छैक
धिपाओल लोहा सन शब्द कान मे–
''घरो ठीक सँ नहि सम्हारि पबैत छी
तऽ अहाँक एतय कोन काज''

सहमि जाइत अछि ओ
सुझाय लगैत छै तीनू लोक
आखिर कतय जायत
आ की करत
जकरा भाग्य मे
केवल काजे-काज छैक
आराम आ सम्मान
तय नहि कएल गेलैए एखनो धरि
एतेक भेलाक बादो!

•

मौन

गुलाबक पत्ती नहि अछि
अहाँक प्रेम
आ नहि बगुरक काँट

अहाँक प्रेम
सुसुप्त ज्वालामुखी जकाँ
अविचल अछि
स्थिर अछि
जे ने कोनो प्रेम स्वीकारैत अछि
ने दैत अछि

अहाँ तऽ भइयो केँ
नहि छी हमरा जीवन मे
हमरा सुख-दुःख मे
अहाँक मौन
पसरल रहैत अछि
हमरा चारूकात
जे हमरा सँ
हमरा हेबाक हिसाब मँगैत अछि
सपनाक पंख कटैत अछि
अगर अहाँ सुख-दुःख सँ सिक्त
राग-अनुराग सँ तृप्त
सामान्य मनुष्य नहि छी
तऽ एहि मे हमर कोन दोष

कोन दोष हमर
की हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी
अहाँ सँ प्रेम चाहैत छी? •

टूटल तार

महगाइ, बीमारी आ बेरोजगारी जकाँ
हमरा लेल
अहाँक प्रेम
आब आम भऽ गेल

पहिने अहाँ हँसैत छलहुँ
तऽ भोरुका सूर्य जकाँ
सम्पूर्ण अस्तित्व पर
लालिमा पसरि जाइत छल

पहिने अहाँ देखैत छलहुँ
तऽ त्रिवेणीक सुर-संगीत
हमरा कान मे सुनाइत छल

आब चाउर मे काँकड़ जकाँ
तेल मे मोबिल जकाँ
घी मे डालडा जकाँ
दूध मे यूरिया जकाँ
मिलावटी लगैत अछि
हमरा अहाँक प्रेम
जे वीणाक टूटल तार जकाँ
सुर नहि साधैत अछि
मन केँ नहि भाबैत अछि
जकर ग्रहण आ परित्याग
दुनू कठिन अछि
हमरा लेल।

•

पारो

पारो आब सियान भऽ गेली
अपनहि लैत छथि निर्णय
अपना लेल
कऽ देलखिन अछि निश्चिन्त
पीसी केँ आब
बियाह-दानक झंझटि सँ
आब ओ भोरे
उठबैत छथि साइकिल
आ विदा होइत छथि
स्कूल-कॉलेजक लेल
टुनटुनबैत घंटी
गबैत गीत

पारोक जीवन मे आब छनि
अपना लेल सपना
सुन्दर भविष्यक कल्पना
नहि छनि हुनका पलखति
कोनो आइ-माइ केँ गप्प सुनती
कोनो चौधरीक सख-सेहन्ता पूर करती।

•

अल्हड़ हँसी

कमलक फूल जकाँ
भभा केँ हँसैत अछि 'प्राची'
तरेगन सन चमकय लगैत अछि
ओकर दुधिया दाँत
साफ उज्जर
घास चरैत
एकटा बकरी केँ देखि
अँगुरी सँ इसारा करैत अछि
'पपा होबा देखियौ गैया'
'भभा' केँ हँसय लगैत छी हमहुँ
'भभा' केँ हँसय लगैत छथिन 'पपो'
'धत! बकलेल' ई गैया नहि बकरी छी
'प्राची' केँ बुझबैत छथिन 'पपा'
मुदा हँसी नहि रूकैत अछि
हमहुँ हँसी रहल छी
पपो हँसी रहल छथि
प्राचियो हँसैत अछि
कनेकालक लेल
घनघोर घटा छटि जाइत अछि
आसमान भऽ जाइत अछि साफ
हवाक स्पर्श नीक लगैत अछि
लगैत अछि कतेक सरल आ सोझ अछि
एकर जीवन
'एन.एच.' जकाँ जतय धरि नजर जाइत अछि
सोझे-सोझ देखाइत अछि
कोनो उभर-खाभर नहि

फेर घेर लैत अछि चिन्ता
की अबैबला दिन मे
रहि पाओत
एकर जीवन
एतेक सरल
एतेक सोझ
की पढ़ि सकत ई काल्हि
आँखिक प्रश्न
मनक भाषा
कऽ सकत भेद
मनुक्ख आ दानव मे
आत्म सुरक्षार्थ उठा सकत
कोनो ठोस कदम
लऽ सकत अपना लेल
सही निर्णय
जतय 'छौड़ी' केँ लड़य पड़ैत छै असगरे
चक्रव्यूहक बीच
सखा-सम्बन्धी
दूर ठाढ़ तारक गाछ जकाँ
छायाहीन होइत अछि
आश्रयहीन बनैत अछि
ओहि कठिन परिस्थितिक सामना
करत बुद्धि-विवेक सँ
वा एहिना बकरी केँ गाय बुझि
हँसैत रहत
अल्हड़ हँसी!

•

स्त्री आ बुद्ध

एहि सए दुःख सँ नीक एक दुःख
नीक तऽ होइतए
जे बुद्ध बनि जइतहुँ
छोड़ि जइतहुँ
एतहुका माया-मोह एतहि
जहिनाक तहिना
जे बेर-बेर हृदय तोड़ैत अछि
बेर-बेर अरण्यरोदन करैक लेल
छोड़ि जाइत अछि
ओहिनाक ओहिना

कखनो लगैत अछि
चारूकात सुखे-सुख अछि
कखनो लगैत अछि
चारूकात दुःखे-दुख अछि
एहि सुख-दुखक बीच
जे अन्तर्द्वन्द्व अछि
ओ बड़ मारुख
एको घड़ी
बिलमय कहाँ दैत अछि कतहु
मुदा स्त्री सँ बुद्ध बनब
की सम्भव अछि

नहि अछि सम्भव
स्त्री यशोधरा बनि सकैत अछि
बुद्ध नहि
स्त्री परित्यक्ता होथु भले
परित्याग करती ककरो
से कहाँ अछि सम्भव!

•

आदि सँ अन्त धरि

बर आ पीपरक जड़ि जकाँ
ततेक ने समायल छी हम
एहि धरतीक भीतर धरि
की कतबो उखाड़ि केँ
फेकैक कोशिश करब
हम नहि उखरब
हम खीरा-काँकेरक लत्ती नहि
की अहाँ हाथ लगायब
आ हम भऽ जायब
जड़िविहीन

हमर अस्तित्व पर टिकल अछि
अहाँक अस्तित्व
हमरा छत्र-छाया पर
निर्भर करैत अछि
अहाँक सुख-दुख
फेर कियै नहि मानि लैत छी
हमर ई बात
शंख कतबो फूकब
घड़ी-घंट कतबो बजायब
भगवान केँ कतबो सुमिरब
बिनु हमरा इच्छा केँ
पूर्ण नहि हैत
अहाँक एको मनोरथ

कियैक हमर श्रम
हमर भावना

हमर साहस पर
टिकल अछि
अहाँक सब मनोरथ

आँखिक पानि
मरय नहि कहियो
ई ध्यान राखब
मोनक विश्वास टूटय
नहि कहियो
ई मोन राखब
मोन राखब
की प्रेमक बदला प्रेम
आ घृणाक बदला घृणा
भेटैत रहलैए लोक केँ
आदि सँ अन्त धरि...!

•

प्रतिकार

नील आसमानी चादरि सन
पसरल अछि
हमर सम्पूर्ण अस्तित्व पर
अहाँक प्रेम
जखन कि हम जनैत छी
अहाँक हृदय मे
हमरा लेल
ने काल्हि कोनो जगह छल
ने आइ कोनो जगह अछि
मीलक पाथर बनल
अहाँ ठाढ़ रहलहुँ सब दिन
बीच चौबटिया पर
की देखू हम
कतेक दृढ़ निश्चयी छी
नहि पड़ैत अछि हमरा पर
कोनो सर्दी-गर्मी
पानि-पाथरक असरि
मुदा मीता! हम की करी
हम तऽ जतेक बेर
अहाँ सँ दूर जाइक प्रयत्न करैत छी
ओतेक बेर हारि जाइत छी
मोन घुरि अबैत अछि
अहीं लग
ई जनितहुँ कि अहाँ हमरा सँ
प्रेम करितहि नहि छी
मुदा प्रेम मे प्रतिकार

आवश्यक तऽ नहि

आवश्यक तऽ नहि
की हम जकरा सँ प्रेम करैत छी
ओहो हमरा सँ प्रेम करैत हुअ!

•

माय

कतेक नीक होइतए
की माय
कहियो बूढ़ि नहि होइतथि
बीमार नहि परितथि
कहियो नहि मरितथि
जीबैत रहितथि सदैव
अपन छत्र-छाया मे समेटने
हमरा गामक विशाल
बरक गाछ जकाँ
अपना बाल-बच्चा केँ
शीत-रौद केँ धकियबैत दूर
आ जखन कखनो
घुरितहुँ घर
जीवन-संघर्ष मे सँ
हारिकऽ या जीतिकऽ
दुःखक मोटरी
या सुखक पेटार लेने
माय समेटथि बर हुलास सँ
आ माथ पर हाथ रखैत
कहितथि– ''दाय तों चिन्ता नहि करऽ
हम छियौ तोरा संग''

कतेक नीक होइतए
माय जीबैत रहितथि
सृष्टिक आदि सँ अन्त धरि
आकाशक आँगन जकाँ
अपन आसमानी आँचर पसारने

आ हम निश्चिंत भऽ
हँसैत-गबैत
जीबि लितहुँ अपन जीवन
निर्वाध नदीक वेग सन बहैत
सब तीत-मीठ अनुभव केँ समेटैत!

•

पाखण्ड

'त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम्'
व्यंग्य सँ जपैत
भरि तरहत्थीक
सिनूरक ठोप
कपार मे केने
अपन कपड़ो-लत्ता
स्त्रीगणक असघनी सँ
अलग असघनी पर रखैत
मृदंगक ताल पर
अपन पुरुषार्थक डंका
भरि गाम मे पीटैत छलखिन
बड़का बाबा

बड़की मैंयाँ डरे त्रास
काते-करोट रहैत छलीह
आगू मे थारी
आ भरि लोटा पानि दऽ
ठाढ़ भऽ जाइत छलीह
केबाड़क पाट लग
घटी-बढ़ी परसन दैक लेल

अधरतिया मे
जखन सुति रहैत छल लोक
दबले पैरे
अबैत छलखिन बाबा
आ बाबीक कोखि मे
संरक्षित कऽ जाइत छलखिन

अपन वीर्य
आ 'त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम्' जपैत
निकलि जाइत छलखिन
घर सँ बाहर

सुनबा मे तऽ ईहो आयल
लाल काकी, छोटकी काकी
आ रमलतियाक बेटी
जखन लहुके वयस मे
भऽ गेल रहै विधवा
तऽ साम, दाम, दण्ड, भेद, नीति केँ
ब्रह्मास्त्र बना
बड़के बाबा
करैत छलखिन
ओकरा सबहक शील भंग
अधरतिया मे
आ ओकरो सबहक कोखि मे
अपन वीर्य संरक्षित कऽ
निकलि अबैत छलखिन
घर सँ बाहर
'त्रिया चरित्रम पुरुषस्य भाग्यम्'
जपैत-जपैत।

•

मुक्ति

बड मनोयोग सँ
पुनीता केलक अछि
अपन पिताक श्राद्ध

अपनहि हाथे
देलक मुखाग्नि

अपने कान्ह पर
उठौलक अर्थी

अपने गरदनि मे
उतरी पहीर
तेरहो दिन केलक कर्म
नवी पोखरिक घाट पर
आ अपनहि रान्हि
पिण्डक भात
देलक पिण्ड
गम्हारिक पात पर
अपन पिताक नाम

समाजक मठाधीस लोकनि
भलेहिं केलखिन
घोर विरोध
मुदा डिगल नहि पुनीता
उठौलक सब भार-कुभार
अपना माथ पर
जरौलक एकटा दीप
अपना डीह पर
जकरा नहि मिझाय देबाक लेल

कृतसंकल्प अछि ओ

बड़को ककाक उपराग
कहाँ एलैए ऊपर सँ
एखन धरि
की बेटी हाथे आगि पड़ल
बेटी हाथे पिण्ड पड़ल
बेटी हाथे श्राद्ध भेल
तऽ मुक्ति नहि भेल
फँसि गेलौं नरक मे
आ नहि भटकैत छनि
हुनकर आत्मा
कलमे-गाछिये
बारिये-झाड़िये
जत्र-तत्र

हुनकर तऽ परछाहियो
कहाँ देखैत अछि लोक
निपुत्तराहा-निपुत्तराहा कहि केँ
भलेहिं जीवित मे
जतेक खिझेने होइनि लोक सभ
हृदय दुखेने होइनि
बेटा बला सभ
मरलाक बाद धरि
काका निश्चिन्त छथि
एहि मर्मघातक
दुनियाँ सँ दूर
एकटा आरो दुनियाँ मे
जकर पता
नहि बुझल छै लोक केँ।

•

ओ पुरुषार्थ कोन काजक

हे समाजक भीष्म पितामह
कते दिन धरि मौन रहबै
अपन विवशता प्रगट करैत
अपना केँ वचनवद्ध कहैत
कोनो परिस्थितिवश
असहाय, असुरक्षित आ त्रासित
भुखायल ब्रह्मपिशाच सँ
बुट्टी-बुट्टी मे नोचाइत
कोनो स्त्रीक दुर्दशा पर

कतेक दिन धरि
अहाँक आँखि
निर्लज्ज भऽ देखैत रहत
एहि समाजक
स्त्रीक मान-मर्दन

कतेक दिन धरि
अहाँक कान
अनसुना करैत रहत
हकोप्रत्यासित भऽ कनैत
बेबस स्त्रीक
व्यथा-कथा

कते दिन धरि
बान्हल रहत
अहाँक हाथ
अपनहि कुल-खनदानक

अपनहि बहु-बेटीक आबरू
भरल बाजार मे
लुटाइत देखलाक बादो

हे! समाजक भीष्म पितामह
ओ पुरुषार्थ कोन काजक
जे ककरो रक्षा नहि केलक
ककरो मान-सम्मान
नहि बचेलक!

•

विष सँ सविष

झड़कलही!
एहि नाम सँ
परिचित अछि ओ
पूरा समाज
पूरा गाम मे
करैत अछि
कुटौन-पिसौन
मँजैत अछि
बरतन-बासन
नीपैत अछि
लोकक चिनबार
खेलबैत अछि
दोसरक नेना
आ बदला मे पबैत अछि
भरि पेट अन्न
देह भरि वस्त्र
जेना-तेना बिता लैत अछि राति
कोनो घरक ओसारा पर

पहिने ओ एहन नहि छल
चर सन-सन केस
छुरिये सन नाक
डोका सन आँखि
मुट्ठियेक डाँर
दुधिया रंग
देखै मे दुर्गा भगवती सन
लगैत छल ओ

जे देखै एक बेर
से देखितहि रहि जाइ
''आह! वासो वालीक रूप
तऽ अनूप अछि''

ओहि रूप पर
पानि फिरि गेलै
ताहि दिन
जहिया कैक साल
बितलाक बादो
नहि भेलै ओकरा
कोनो बाल-बच्चा
आ लोक कहय लगलै
''बँझिनियाँ-बँझिनियाँ''

गंगा-कमला मे
कतबो कबुला केलकै
ओकर सासु
नहि फुलेलै
एकोटा फूल
ओकरा फुलबारी मे

एहन बात नहि छै
जे ओकरा दुःख नहि भेलै
दुःख तऽ भेलै बहुतो
मुदा कइये की सकैत छल
विधनाक लेख
भोगय पड़ै छै सब केँ
ई सोचि
मोन मारि लेलक
आ जीबय लागल
पाथर सन कठोर

अपन जीवन

धैर्यक बान्ह टूटि गेलै
ओहि दिन
जहिया चारिये दिनक खातिर
गेल रहय नैहर
आ पता लगलै ओतहिये
घरवला कऽ लेलकै
दोसर बियाह
ओ विष सँ सविष भऽ
ढारि लेलक
अपना देह पर
मटिया तेल
सलाइक काठी खड़रैत
कृतसंकल्प भऽ गेल
''आब कोन सुख भोगै लेल
ककर मुँह देखै लेल
जीयत ओ
एहि दुनियाँ मे''
एतेक भेलाक बावजूदो
बचा लेलकै लोक
ओकर जीवन
धरि रूप सँ
नया नाम पड़ि गेलै झड़कलही'
मुदा तैयो
कहाँ पसीझलै
ओकरा घरवलाक मोन
ओ तऽ मगन अछि
अपन नव दुनियाँ मे
जेना किछु भेले नहि हो।

•

अस्तित्व

अहाँ लाख मेटायब
नहि मेटायत हमर अस्तित्व
जँ छल-प्रपंच सँ
छीन लेब अहाँ
हमर एहि जीवन केँ
तऽ हम फेर सँ जन्म लेब
अहाँक अँगना महक
तुलसी बनि
जकरा जड़ि केँ
सींचय पड़त अहाँ केँ
श्रद्धा आ सत्कार सँ

जँ तुलसीयो रूप मे
उखाड़ि फेकब अहाँ हमरा
अपना अँगना सँ
तऽ कोनटा परहक बेली बनि
जन्म लेब हम
जकर देखभाल
करय पड़त अहाँ केँ
जकर सुगन्धि सँ
मह-मह करत
अहाँक घर-अँगना
अहाँक मोन

जँ कोनटो पर सँ
उखाड़ि फेकब हमरा
तऽ बाड़ी महक कनैल बनि
घुरि आयब हम
अहाँक जीवन मे

आ फुलायब
दूर आसमान मे
रूप-गुण सँ परिपूर्ण
जकरा छुबै लेल
तरसब अहाँ
जकरा अपन कहैक लेल
तड़पब अहाँ

जँ काटि देब
ओतहियो हमर डारि
छिन्न-भिन्न कऽ देब
हमर रूप-रंग
मुदा तैयो
हम नहि मरब
नहि मेटायत
हमर अस्तित्व
बीज रूप मे
स्थिर भऽ जायब हम
धरतीक कोखि मे आ अंकुरित भऽ
फुटि पड़ब बाहर
समय देखितहि
मौसम बदलितहि
हम रहब विद्यमान
सदाक लेल
अहाँक जीवन मे

अहाँक चाहलाह
नहि चाहला सँ
नहि पड़त कोनो फर्क

हमर अस्तित्व
शाश्वत अछि
सनातन अछि।

•

रजनीगंधाक हँसी

आँखि जखन मुनैत छी
कतहु किछु नहि देखाइत अछि
घुप्प-घुप्प अन्हरिया चारूकात
ने घर-अँगना
ने नदी-पहाड़-जंगल
कतहु किछु नहि
बस देखाइत अछि
हृदय-मन्दिर मे जरैत
अहाँक प्रेमक
एकटा दीप
साँस मे अबैत
अहाँक स्पर्शक
एकटा गंध
जखन कि हम जनैत छी
अहाँ बहुत दूर चलि गेलौं
हमरा सँ
जतय सँ घुरब
ने अहाँक लेल सम्भव हैत
ने हमरा लेल
हमरा-अहाँक बीच
ठाढ़ रहत सदैव
'एकोऽ हम द्वितीयो नास्ति'क देबाल
जकरा पार करब
ने अहाँ सँ सम्भव हैत
ने हमरा सँ
मुदा तैयो
रजनीगंधाक हँसी

पसरल रहत हमरा जीवन मे
अहाँक नामक
बेलीक मादकता
अनुभव करैत रहब अहाँ
हमरा स्पर्शक
नहियो भऽ केँ
अहाँ रहब सदैव
हमरा जीवन मे
हम रहब अहाँक जीवन मे।

•

विश्वासक हथियार

एतहुका पुरुष आ वचनक
कोनो सम्बन्ध नहि
कतहु ताल-मेल नहि
विश्वास नहि हुअ तऽ
इतिहासक पन्ना
उनटा केँ देखू
सीता कहती रामक कथा
राधा कहती कृष्णक
द्रौपदीक तऽ नोरे सँ
लिखायल अछि महाभारत
अहिल्या, यशोधरा, रत्ना सन
अनेको स्त्री
सुनेती अपन व्यथा-कथा
ई जे महापुरुष सब भेला हें ने
से एहिना नहि भेला हँ महान
स्त्रीयेक मान-सम्मान केँ
अपन सफलताक सीढ़ी बना
बढ़ैत गेला हें
देवत्वक हद तक

आइयो-काल्हिक स्त्री
कोनो कम परिचित नहि अछि
एतहुका पुरुषक वचन सँ
विश्वास नहि हुअ तऽ
हमरा गामक गीता सँ जा केँ पुछू
ओकर तऽ अठारहो अध्याय
झूठे आ फरेब सँ

लिखायल छै
जकरा सुनबैत-सुनबैत
अकरसहाँ ओ कानय लगैत अछि

एतहुका पुरुष एहिना नहि अछि महान
बर-बर गुण छै ओकरा लग
बेचारी विश्वासेक हथियार सँ
मारल जाइत रहलीह अछि सदैव।

•

फूल आ डारिक सम्बन्ध

फूल पुछैत अछि डारि सँ
हमरा-अहाँक बीच
कतेक दिनक सम्बन्ध
केहन सम्बन्ध
डारि कहैत अछि
फूल सँ
हमरा-अहाँक बीच
ताधरिक सम्बन्ध
जामे तक
अहाँ सुन्नरि छी
पराग भरल रहत
अहाँ मे
ताबहि तक
वयःसन्धि केँ बीततहि
पराग सँ बेलग होइतहि
खत्म भ' जायत
हमरा-अहाँक बीचक
सबटा सम्बन्ध
अन्तर एतबे रहत
हमरा अँगना मे
फेर कोनो नव
फूल फुलायत
नव-नव बसन्त आयत
अहाँक जीवन हैत
अनिश्चित, अनजान
लोकक हाथ मे
जे कखनो, कतौ

पैर तर लऽ केँ
मसलि देत
वा निर्माल बना केँ फेक देत
नहि तऽ मुरझा केँ
मिलि जायब अहाँ
ओहि माटि मे
जाहि सँ निकलल छलौं।

•

मझधार

बियाहक आइ
सोलहम बरख बीति रहल अछि
अहाँ ओहि घर
आ हम एहि घर मे
दुनू दू दिस छी
कोनो उमंग नहि केम्हरो
ककरा लेल सजब-धजब
ककरा लेल शृंगार करब
के अछि देखनिहार
के अछि भावना केँ बुझनिहार
जीवन रेगिस्तानक बालु सन
धीपल-धीपल
जाहि पर प्रेमक
कोनो अंकुर
कहाँ फुटैत अछि
स्नेह-समर्पणक
कोनो हिमपात
कहाँ हमरा लग आबि
पबैत अछि
एक मोन कहैत अछि
हम अहाँ लग जाइ
दोसर मोन कहैत अछि
अहाँ हमरा लग आबी
किछु अहाँ कही
हम सुनी
किछु हम कही
अहाँ सुनी

मुदा नहि अहाँ

हमरा लग आबि रहल छी
आ नहि हम
अहाँ लग जा रहल छी
दू कोठलीक दू डेगक दूरी
दू जन्मक दूरी सन लगैए
गरदा तोपल अएना सन
छवि तऽ देखाइत अछि
मुदा धुँधला-धुँधला
जतय एक-दोसरा केँ जानब
एक दोसरा केँ पहिचानब
कठिन अछि

एक साल
दू साल
साले-साल कऽ केँ
सोलह साल आइ बीत गेल
हम-अहाँ घुमि-फिरि केँ
ओतहि पहुँचलौं अछि
जतय सँ विदा भेल रही

मोन अछि एखनो हमरा
चतुर्थीये राति मे
भऽ गेल रहय तनातनी
हमरा-अहाँक बीच
आ हम एहि कात
आ अहाँ ओहि कात
मुँह घुमा केँ
बीता देने रही राति
हम-अहाँ
मोतीक मनका नहि
केवल मनका रहलौं
सब दिन

अपन-अपन बाँसुरी
अपन-अपन धुन
अहाँक धुन
नहि हमरा नीक लागल कहियो
नहि हमर धुन
अहाँ केँ

अरण्यरोदन करैत रहलौं
हम-अहाँ असगरे
नहि कियो सुननिहार
नहि कियो समझनिहार
दुनियाँ हँसय तऽ हँसय
तकर परवाहि
नहि अहाँ केँ भेल कहियो
नहि हमरा
एके नाव मे सवार
खेबैत रहलौं हम-अहाँ
नाव केँ अलग-अलग दिशा मे
परिणाम-नाव कहियो
कछैर नहि लागल
मझधार मे घुमैत रहल
गोल-गोल
तकर दुःख
अहूँ केँ रहल
आ हमरो
मुदा नहि अहाँ कहियो
प्रयास केलौं
नहि हम।

•

अजन्मी-1

ठुनकि-ठुनकि
कनैत अछि देवकी
बेर-बेर साड़ी सँ
झँपैत अछि
अपन पेट
जे हाथीक सूँढ़ सन
निकलल जाइत छै आगू
ओकरा डर छै
एहू बेर ओकर पेट मे
कहीं बेटिये ने होइ
आ एहू बेर
ओकर घरबला
सब बेर जकाँ
करा ने दै 'एबॉर्शन'
बेटा-बेटा करैत-करैत
अपनहि सन्तानक हत्या
करबैत-करबैत देवकी
थाकि गेल अछि
धिक्कारैत छै ओकर आत्मा
मोन पड़ि जाइत छै
अपन माय
जे बड आवेश सँ
ओकर लालन-पालन केने रहै
बड कबुला-पाती कऽ
ओकरा देव-पितर सँ मँगने रहै
कटेने रहै गंगा कछरि मे 'चू'
चढ़ेने रहै ब्रह्मबाबा कें 'घोड़ा'

सलहेशक गहबर मे
झुकेने रहै माथ
आ कनिओ धाह-जर होइ त'
वैद्य जी सँ लऽ कें
फूल-विभूत तक
कऽ दै एकटार
सैह देवकी
आइ विवश अछि
झुकल अछि
अपन घरबला
अपन अरिजन-परिजनक समक्ष
चाहियोकऽ नहि कऽ पबैत अछि विरोध
नहि उठा पबैत अछि
अपन सन्तानक लेल आवाज
भरि पेट अन्न
आ भरि देह वस्त्रक दविश मे।

•

अजन्मी-2

हे! हमर पिता
अगर अहाँक माथ पर
बेटाक भूत सवार अछि
आ अहाँ कऽ रहल छी
हमरा सन-सन अनेको
अजन्मी बेटीक जड़ि उकन्नन
तऽ करू
हम कइए की सकैत छी
अहाँ सन-सन क्रुर
हृदयहीन
पिताक विरुद्ध
जे अपने खून केँ पानि बना
बहबैत अछि नाला मे
जे अपने अर्धांगिनीक
जीवन केँ
दाव पर लगा
खेला रहल अछि
हारि-जीतक खेल
जे अपने आत्मजाक
बलि चढ़ा
कहबय चाहैत अछि
बेटाक बाप
जे अनेको कुकृत्य कऽ
बचय चाहैत अछि
डेगी नावक सहारे नरक सँ
मुदा कान खोलि केँ सुनि लिअ
जँ कनिको विवेक हुअ बाँचल

हे! निष्ठुर निर्दयी पिता
कहू, जँ मैंयाँ नहि होइतथि
एहि धरती पर
अहाँ कतय सँ अबितौं
जँ नाना
मायक हत्या
नानीक पेटे मे कऽ देने रहितथिन
तऽ कोन कोखि मे
संरक्षित करितौं अहाँ
अपन भ्रूण
कोन स्त्री केँ
बनबितौं अहाँ
अपन जीवन-संगिनी
जँ अहीं सन सोच
भऽ जाइनि
माधव बाबू आ लाल बाबू केँ
तऽ कहू अहाँक बेटा
आजन्म अविवाहिते
नहि रहि जेता
एकटा स्त्री लेल
जीवन पर्यन्त
तड़पित नहि रहि जेता

जँ हमर प्रश्नक जवाब हुअ
तऽ अवश्य देब
हे! हमर पिता
नहि तऽ हमर शाप सँ
शापित हैत
अहाँक सम्पूर्ण कुल-खानदान
जकर भागीदार

अहीं कहायब

आब हमरा लग धैर्य नहि
केवल अन्धैर्य अछि
जे सब किछु लील लेबा पर
आतुर अछि
आतुर अछि
सम्पूर्ण व्यवस्था केँ
पलटि देबा पर।

•

स्त्री देहक मीना बाजार

बदलय पड़तै
एहि समाज केँ
अपन मानसिकता
ओ दिन बीत गेलै
जे देह केँ आधार बना
स्त्री केँ दोहन कऽ
कुचलैत रहबै
ओकर मान-सम्मान केँ
आ स्त्री कनैत-कलपैत
बैसल रहत
घरक कोनो कोन मे
लाजे मूड़ी झुकेने

आब दाता आ भोक्ताक परिभाषा
गढ़ल जायत नव ढंग सँ
नव ढंग सँ बनत
समाजक रीति-नीति
जतय समान रूप सँ तौलल जायत
स्त्री आ पुरुषक मान
आब इन्द्रक सभा मे
नहि नचती
मेनका आ रंभा
कोनो भी हाल मे
कतबो विकट स्थिति होएत
नहि लगेती स्त्री
अपना देहक मीना बाजार
कहू, इज्जति-आबरूक हवाला दऽ

कतेक दिन धरि खेलाइत रहबै
स्त्रीक अधिकारक संग
शतरंजक खेल
आ मुँह मे पान दबा
दैत रहबै चौअनियाँ मुस्कान
जे हम जीत गेलौं...!

•

मान

जहिना लगबैत छियै
गमला मे तुलसी
आ भोर-साँझ
दैत छियै पानि
एहि चिन्ता मे
की कहि पानिक अभाव मे
ओ सुखा नहि जाय
तहिना संरक्षित करय पड़त
बेटियोक जीवन
अपन घर-परिवार मे
अपन समाज मे
मानय पड़त ई बात
बेटी अछि तऽ
सब अछि
नहि तऽ जीवन
बंजर-वीरान
राग-रंगहीन
जकरा भेला, नहि भेला सँ
कोनो अन्तर नहि
बचबय पड़त बेटी केँ
एहि तपिश भरल वातावरण सँ
अपन स्नेह-प्रेम आ ममताक
छाहरि दऽ
देमय पड़त विस्तृत आँगन
पल्लवित आ पुष्पित देबाक लेल
बदलय पड़त
अपन सोच

की बेटी कुलदीपक नहि
अहाँ देबै बेटी केँ मान
तऽ बेटियो मान दऽ उठेती
अहाँक सम्मानक भार।

•